thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 11 अंक : 12 रोहतक, 21 अगस्त, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

ईश्वर-वेदभक्त तथा मानवीय सर्वगुण सम्पन्न महर्षि दयानन्द

❑ मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक इतिहासार्थ निर्णय ग्रन्थ के लेखक श्री शिवशंकर शर्मा जी काव्यतीर्थ ने एक वाक्य में महर्षि दयानन्द के अनेक व्यक्तिगत गुणों का परिचय दिया है। उनका वाक्य है -- ''निर्भय, न्यायकर्ता, सर्वप्राणिहितकर, दीर्घदर्शी, समदृष्टि, पक्षपातरहित, प्रभावशाली, प्रतिभावान, महासमीक्षक, महासंशोधक, तेजस्वी, ब्रह्मवर्चसी, ब्रह्मवित्, ब्रह्मपरायण, बाल ब्रह्मचारी, उर्ध्वरेता, सुवक्ता, वाग्मी, जितेन्द्रिय, योगिराज, आचार्यों का आचार्य, गुरुओं का गुरु, पूज्यों का भी पूज्य, जगद्वन्द्य, प्रहसितवदन, प्रांशूबाहू, समुन्नतकाय, सदा आनन्द, निर्मल, निर्विकार, समुद्रवत्गाम्भीर, पृथ्वीवत्क्षमाशील, अग्निवत् देदीप्यमान्, पर्वतवत् कर्तव्यस्थिर, सद्गतिवायुक्त निरालस, रामवतलोकहितकारी, परशुरामवत् अन्याय संहारी, बृहस्पतिवत् वेदवक्ता, वसिष्ठवत् वेद प्रचारक, असत्य का परमद्वेषी, सत्य का परम पक्षपाति, आर्यावर्त्त के परम पिता स्वामी दयानन्द हैं।'' इन पंक्तियों की ओर आर्यजगत के विख्यात विद्वान् एवं लेखक डा. विवेक आर्य, दिल्ली ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है। इसे हम अपने सभी पाठकों तक पहुंचाकर उन्हें लाभान्वित करना चाहते हैं। हमने सन् 1970 से स्वामी दयानन्द जी के साहित्य को पढ़ना आरम्भ कर निरन्तर पढ़ रहे हैं। इस अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ जी ने महर्षि दयानन्द के बारे में जो शब्द लिखे हैं, वह एक-एक शब्द सत्य व यथार्थ है तथा इनमें अतिशयोक्ति एवं आलंकारिक वर्णन किंचित नहीं है।

स्वामी दयानन्द का एक गुण उनका निर्भय या निर्भीक होना था। उनके जीवन में अनेक उदाहरण हैं जिनसे उनके इस गुण की पुष्टि की जा सकती है। सन् 1875 में सत्यार्थ प्रकाश के आठवें अध्याय में एक स्थान पर विदेशी अंग्रेजी राज्य पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने लिखा है कि 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।' अंग्रेजों के राज्य में उनके विरुद्ध ऐसी कठोर टिप्पणी करना किसी के लिए भी सम्भव नहीं था परन्तु स्वामी दयानन्द ने यह टिप्पणी करके अपूर्व निर्भीकता का परिचय दिया। ऐसे और भी उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं। न्यायकर्ता का गुण भी स्वामी दयानन्द में भरपूर था। वह एक पौराणिक शिवभक्त परिवार में पैदा हुए। शिव लिंग की पूजा से उन्हें 14 वर्ष की अवस्था में ही विरक्ति हो गई थी। उन्होंने सभी मत-मतान्तरों व धर्मों का अध्ययन किया। वह इस निष्कर्ष पर पहुंचें कि धर्म सम्बन्धी सत्य मान्यतायें व सिद्धान्त केवल वेद व ऋषि प्रणीत वैदिक ग्रन्थों व शास्त्रों में ही वर्णित हैं। अन्य सभी मत-मतान्तर सत्य व असत्य मान्यताओं का मिश्रण व समूह, अज्ञान व स्वार्थ पर आधारित मान्यताओं से युक्त हैं। उन्होंने अपने स्वमत जो पिता से उन्हें प्राप्त हुआ था, उसका पक्षपात न कर मानवमात्र के हित की दृष्टि से उसका व अन्य सभी असत्य मतों का खण्डन किया और सत्य मत वेद, जिसकी उन्होंने निष्पक्ष होकर गहन परीक्षा की थी, मण्डन किया। सभी मतों व धर्मों के आचार्यों को उन्होंने चुनौती दी कि वह सत्य व असत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों पर शास्त्रार्थ व लिखित धर्म-चर्चा कर सकते हैं। उन्होंने सभी मतों के विद्वानों से धर्म चर्चा की, परन्तु कोई एक भी व्यक्ति उनकी किसी भी वैदिक मान्यता व सिद्धान्त में त्रुटि या कमी नहीं दिखा सका और न आज तक ही दिखा पाया है। स्वामी दयानन्द जी ने अपने समय में वेद विरूद्ध सभी मतों की मान्यताओं का प्रबल तर्कों व प्रमाणों से निष पक्ष होकर खण्डन किया था। उनसे पूर्व यह कार्य स्वामी शंकराचार्य ने बौद्ध व जैनमत का खण्डन कर किया था जिसे बौद्ध व जैन मतावलम्बियों ने स्वीकार किया था। इस सम्बन्ध में यह कहना उचित होगा कि मानव जाति की उन्नति, सुख व शान्ति के लिए अविद्या का नाश, विद्या की वृद्धि, सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग, असत्य का खण्डन, सत्य का मण्डन तथा सभी कामों को सत्य व असत्य का विचार करके करना ही सभी मनुष्यों का कर्तव्य एवं धर्म है। इस आधार पर महर्षि दयानन्द एक न्यायकारी व पक्षपातरहित महापुरुष सिद्ध होते हैं। आइये, अब महर्षि दयानन्द के अन्य गुण 'सर्वप्राणिहितकर' पर भी विचार कर लेते हैं। महर्षि दयानन्द अकारण किसी भी प्राणी के प्रति हिंसा के व्यवहार के विरुद्ध थे। वह मांसाहार को इस कारण अधर्म मानते थे कि इससे मनुष्यों के प्रति उपकार करने वाले मूक व निर्दोष पशुओं को पीड़ा व दुःख पहुंचता है। किसी भी प्राणी को अकारण दुःख देना अधर्म व पाप है जिसका फल ईश्वर की व्यवस्था, **'अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'** के अनुसार सभी मनुष्यों को भावी जन्मों में अवश्य भोगना पड़ता है, इससे कोई मनुष्य बच नहीं सकेगा। अपने साहित्य में तो आपने किसी भी प्राणि को पीड़ा पहुंचाने का विरोध किया ही, गोरक्षा पर आपने ''गोकरुणानिधि'' नाम की पुस्तक लिखकर मनुष्येतर प्राणियों के दो प्रतिनिधियों गाय व बकरी को लेकर इनसे मिलने वाले लाभों, दुग्ध, कृषि, चर्म आदि की चर्चा कर इनकी रक्षा का समर्थन किया है। देश की आर्थिक समृद्धि, उन्नति तथा पर्यावरण की सुरक्षा व संरक्षण के के लिए ऐसी पुस्तक भारत के इतिहास में उनसे पूर्व नहीं लिखी गई। अन्य सभी प्राणी भी हमारी सृष्टि और इसके पर्यावरण की रक्षा व संरक्षण में सहयोगी एवं अपरिहार्य हैं अतः निर्दोष प्राणियों की हत्या एवं मांसाहार अभक्ष्य, अमानवीय एवं अनुचित है।

अब स्वामी दयानन्द के दीर्घदर्शी होने के गुण पर भी विचार करते हैं। स्वामी दयानन्द ने वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के आन्दोलन आर्य समाज को सत्य, युक्ति, तर्क व प्रमाणों पर स्थित किया। वह ज्ञानी व दूरदर्शी थे जिसका प्रमाण है कि उन्हें यह पता था कि आने वाला युग वैज्ञानिक युग होगा जिसमें अतार्किक, प्रमाणहीन, युक्तिहीन व ज्ञानहीन बातों को स्वीकार नहीं किया जायेगा। इसी कारण से उनकी प्रत्येक मान्यता व सिद्धान्त वर्तमान में वैज्ञानिक आधारों पर सत्य सिद्ध हो रहें है जबकि अन्य किसी के पास यह दृष्टि न तब थी और न अब है। सभी मत-मतान्तर असत्य, अज्ञान, तर्क-प्रमाण-युक्तिविहीन मान्यताओं से भरे हुए हैं और सत्य का प्रकाश हो जाने पर भी इनके मताचार्य व अनुयायी असत्य को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। वर्तमान में ऐसे लोगों द्वारा अपनी असत्य मान्यताओं को आस्था का नाम देकर अज्ञानी, भोलीभाली जनता को भ्रमित किया जा रहा है और उन्हें सत्य, सर्वव्यापक व निराकार ईश्वर से दूर किया जा रहा है। पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ द्वारा संकलित महर्षि के उपर्युक्त सभी गुण सत्य व यथार्थ हैं। हमारा अनुभव यह भी बताता है कि महाभारत काल के बाद जितने भी मनुष्य व महापुरूष संसार में हुए हैं, उनमें से किसी में भी वह सारे गुण नहीं थे जो स्वामी दयानन्द के जीवन व व्यक्तित्व में पाये जाते हैं। उनके सभी गुणों को जानने व समझने के लिए हमारा सुझाव है कि स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ व जीवन चरितों सहित उनके पूरे साहित्य को पढ़ा जाये। इससे पाठकों की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक और आध्यात्मिक उन्नति होगी और उनका यह जीवन सफल होगा।

196, चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001

thearyasamaj.org

ब्रह्मचारी सत्यनिष्ठा से मृत्युविजयी होते हैं

❑ डॉ० अशोक आर्य, 107, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद

ब्रह्मचारी अपने ताप के बल पर सत्यनिष्ठ होकर सत्यनिष्ठ तथा ज्ञानी व्यक्ति मृत्यु पर विजय पाने में सक्षम होते हैं। ब्रह्मचारी पर प्रकाश डालते हुए इस तथ्य को अथर्ववेद के अध्याय 11 सूक्त 15 के मन्त्र संख्या 19 में इस प्रकार उपदेश किया गया है—

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्य: स्वराभरत॥

मन्त्र उपदेश करते हुए बता रहा है कि ज्ञानी लोग, जिन्हें हम सत्यनिष्ठ लोग भी कह सकते हैं, ब्रह्मचर्य तथा तप के द्वारा मृत्यु पर विजय पाते हैं। इस वाक्य में ब्रह्मचर्य और तप, इन दो शब्दों पर विशेष बल दिया गया है। प्रथम शब्द ब्रह्मचर्य का प्रयोग किया गया है। इसलिए आओ हम सर्वप्रथम यह जानने का यत्न करें कि ब्रह्मचारी अथवा ब्रह्मचर्य किसे कहते हैं—

ब्रह्मचर्य अथवा ब्रह्मचारी

ब्रह्म का अर्थ है ज्ञान, परमपिता परमात्मा का दिया गया ज्ञान। हम जानते हैं कि जो ज्ञान परमपिता परमात्मा ने प्राणिमात्र के कल्याण के लिए इस सृष्टि के आरम्भ में दिया था, वह ज्ञान था, जो प्राणिमात्र के कल्याण के लिए दिया गया था। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि क्योंकि यह ज्ञान सृष्टि—

ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजद्बिभर्ति तस्मिन्देवा अधि विश्वे समोता:। प्राणापानौ जनयन्नाद् व्यानं वाच मनो हृदयं ब्रह्म मेधाम्॥ अथर्व० 11/5/24

जिस ब्रह्मचर्य से सब प्रकार की शक्तियों का विकास होता है, वह ही शिक्षा का आधार हो सकता है। जब तक हम इस तथ्य को नहीं समझते, तब तक हम उत्तम शिक्षा, नैतिक शिक्षा, शिक्षा की आधारभूत समस्या का समाधान नहीं खोज सकते, यह भी नहीं समझ सकते कि नैतिक शिक्षा की आज के स्कूलों में, आज के महाविद्यालयों में, जिसे हम आज कॉलेज के नाम से जानते हैं, आवश्यकता है भी या नहीं तथा यदि है तो क्यों?

ब्रह्मचारी का चरित्र निर्माण से विशेष सम्बन्ध होता है। पंडित धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड जी ने तो अपनी पुस्तक **सब समस्याओं का समाधान** वेद में यहाँ तक लिखा है कि **जो सदाचार सम्पन्न सच्चरित्र व्यक्ति नहीं है, वह कभी परम पवित्र परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। सच्चरित्र निर्माण मनुष्य का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।**

पंडित जी के कथन की पूर्ति के लिए नैतिक शिक्षा का महत्त्व स्पष्ट हो जाता है। प्राचीन काल में नैतिक शिक्षा के ही कारण गुरु का सम्मान करते हुए ब्रह्मचारी खेल-खेल में ही बहुत कुछ सीख जाता था। वह अपने आचार्य को समुचित ही नहीं अत्यधिक सम्मान देता था। इसके बदले में आचार्य भी अपने शिष्य को भरपूर ज्ञान का धनी बनाने का पुरुषार्थ करता था। आज की मैकाले शिक्षा पद्धति में यह सब लुप्त हो गया है। न तो आज का विद्यार्थी ही अपने अध्यापक को उचित सम्मान देने की इच्छाशक्ति रखता है तथा न ही आज का अध्यापक अपनी समस्याओं से ऊपर उठकर विद्यार्थी का गुरु बनने का यत्न ही करता है। इसका कारण नैतिक शिक्षा का अभाव ही तो है। इसलिए आज के विद्यार्थी के लिए नैतिक शिक्षा का ज्ञान आवश्यक हो गया है। इसके बिना विद्यार्थी वास्तव में विद्यार्थी बन ही नहीं पाता। अत: आज का चाहे स्कूल हो अथवा कॉलेज, इसके प्रत्येक विद्यार्थी के लिए नैतिक शिक्षा की आवश्यकता से इंकार नहीं किया जा सकता। इसे भली प्रकार से नैतिक शिक्षा देकर, इसे अपनी नैतिक जिम्मेवारियों का ज्ञान देना आवश्यक हो गया है।

भजन तर्ज-देशी हरियाणवी

सुनहरा सिंह नरवाल

टेक-घणखरे माणस समझै सैं आपे नै सबसे श्याणे।
श्याणपत न के जाणे ये स्वार्थी मगज खपाणे॥

1. सबसे श्याणा समय बली कहैं जो सदा साक्षी कलाकृति।
काल अटल गणना पद्धति में सेकेण्ड मिंट चिह्न-स्मृति।
चौतीस हजारवाँ हिस्सा सैकेण्ड का कहलाता है कृति।
न्यूएं सौवां हिस्सा सैकेण्ड कहा जाता है त्रुटि।
ये तालमेल अति-चात्र सारे भेद पड़ै समझाणे।
श्याणपत न के जाणे ये स्वार्थी मगज खपाणे॥

2. फेर दो त्रुटि का एक लव दो लव का हो सै एक क्षण।
तीस क्षणों का एक विपल साठ विपल का एक पल गिण।
साठ पलों की एक घड़ी-ढाई घड़ी का एक घण्टा जा बण।
तीन घण्टे का एक पहर हो आठ पहर के दिन-रात सुण।
न्यूए सप्ताह माह वर्ष शताब्दी बण ये युग बीतते जाणे।
श्याणपत न के जाणे ये स्वार्थी मगज खपाणे॥

3. अद्भुत खेल सृष्टि का यूं भेद कौण समझाये।
विद्वानों की कमी सारे कै टोहे तैं भी ना पाये।
जगह-जगह की खाक छान कै ईब ठोकर खाके धाये।
सुण ले सब की कर ले मण की बात आखर में वाये।
किस-किस गैल्यां माथा मारै घणे सिखे ना खशिए लाणे।
श्याणपत न के जाणे ये स्वार्थी मगज खपाणे॥

4. अभिमान हर जान का दुश्मन यूं चालै अनाड़ी न्यारा।
खरे-खोटे की बिन एक लाठी हाँकै लारा।
जैसे कुत्ते की दुम दबा नलकी में वर्ष बिताये बारा।
काढ़ी तै न्यूए टेढी पाई फेर कुछ ना चाला चारा।
कहै बाण आल की बाण ना जा चाहे कोए तुड़ा लो ताणे।
श्याणपत न के जाणे ये स्वार्थी मगज खपाणे॥

5. शकी सहम-भटकते पावैं जिद में किते शर्त लाते।
हठ में उल्टे पड़ते हैं वे आखिर में मार खाते।
दाब न दाब हटावै सै जब सीधो टक्कर में भिड़ जाते।
जो सांस सब्र का लेते हैं वो जोखम कभी नहीं ठाते।
नट-विद्या से जट-विद्या श्याणी ये खिस्से बहुत पुराणे।
श्याणपत न के जाणे ये स्वार्थी मगज खपाणे॥

6. **सुनहरासिंह नरवाल** ज्ञान बिन के जल-जन्त्री में तूर्त चौकस।
अनेक ढाल के ढोंगी-ढर्रे पढ़ गणित फलित दोनों ज्योतिष।
गणित में गुण सही योग मिलै फलित में ठगने की कोशिश।
समस्या के समाधान भतेरे पर ढोंगी के जल्दी जावै फँस।
पढ़े-लिखे पाखण्ड के वश में लगे अनपढ़ इन्हें बहकाणे।
घणखरे माणस समझै सैं आपे नै सबसे श्याणे।
श्याणपत न के जाणे ये स्वार्थी मगज खपाणे॥

—सुनहरा सिंह नरवाल रिटायर्ड सब-इंस्पेक्टर हरयाणा पुलिस रोहतक, गांव-कथूरा, तह० गोहाना, जिला सोनीपत। हाल निवासस्थान-नरवाल हाउस नियर 'ओमेक्स सिटी' दिल्ली रोड रोहतक। मो० 09416357176

सम्मानित पाठक कृपया ध्यान दें...

यदि 'आर्य प्रतिनिधि' न मिले तो...

सम्मानित सदस्यो! '**आर्य प्रतिनिधि**' आपकी सेवा में प्रत्येक माह की 7, 14, 21, 28 तारीख को प्रेषित किया जाता है। दस दिन तक न मिलने पर कृपया दूरभाष पर अवगत कराएं, पुन: प्रेषित किया जायेगा। कहीं-कहीं से ऐसी शिकायतें भी मिलती हैं कि उन्हें '**आर्य प्रतिनिधि**' लम्बे समय से नहीं मिला है या सदस्यता सहयोग दिये जाने के बाद भी नहीं मिल रहा है, तो इस विषय में रोहतक कार्यालय से दूरभाष पर पुष्टि करने के बाद कृपया सम्बन्धित डाकघर के पोस्टमास्टर अथवा सम्भव हो तो प्रवर अधीक्षक डाकघर-संबंधित प्रखण्ड से भी इसकी शिकायत करें। हम तो, अपने स्तर पर समुचित कार्यवाही करेंगे ही, ताकि आपको '**आर्य प्रतिनिधि**' यथासमय मिलता रहे और डाक के वितरण में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो।

सम्पादक-'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक फोन : 01262-216222, मो० 7206865945

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

उन्नतिबाधक पाप

आज मनुष्य पाप करने से नहीं डरता। पाप के सहारे उन्नति करना चाहता है। सदैव याद रखना चाहिए कि पाप ही उन्नति का सबसे बड़ा बाधक है। केवल मात्र धर्म ही उन्नति का साधक है।

-: वेद-मन्त्र :-

अग्ने रक्षाणो अहं सः, प्रतिस्य देव रीषतः।
तपिष्ठैरजरो दह॥ सामवेद १/४

शब्दार्थः-(अग्ने) हे आगे ले जाने वाले प्रभो (नः) हमें (अहंसः) पाप से (प्रतिरक्षा) बचाइये (रीषतः) हिंसा करने वाले शत्रुओं में से (प्रतिरक्षा) एक-एक से हमारी रक्षा कीजिए। (तपिष्ठैः) तपस्याओं से (अजरः) न जीर्ण होता हुआ (दह) तू कामादि को भस्म कर डाल।

भावार्थ—तपस्वी बनकर ही कामादि को जलाया जा सकता है। इस प्रकार मनुष्य देव बन सकता है और पापों से बचकर वास्तविक उन्नति करने वाला होता है।

व्याख्या—सामान्यतः हम सांसारिक उन्नति को ही आंका करते हैं। परन्तु वह उन्नति गौण है। वह उन्नति नहीं है। मनुष्य की उन्नति तो आध्यात्म उन्नति ही है। अधिक धन प्राप्त करना, ऊंचा पद पाना तथा प्रधान बन जाना आदि का कुछ महत्त्व नहीं है यदि हम निष्पाप नहीं बन जाते। सब कुछ प्राप्त करके रावण व दुर्योधन की तरह पापी को अन्त में रोना ही पड़ता है। बाह्य शत्रुओं से रक्षा करनी चाहिए परन्तु काम, क्रोधादि से अधिक सावधान रहना चाहिये। अन्तः शत्रुओं से अधिक हानि होती है। इसके लिए हमें देव बनना चाहिये। देव बनने के लिए क्या बाल्यकाल, क्या यौवनकाल तथा वार्धक्य हमारे तीनों जीवनकाल तपस्वी हों। भोग हमें जीर्ण कर सकते हैं। उनमें हम न फंसें। हम अजर बने रहें। इस प्रकार जीर्ण करने वाले कामादि को हम जला डालें। कामादि को वशीभूत करके हम ऋषी बनें। यही जीवन का लक्ष्य है। यही प्राप्तव्य है।

वेद के इस रहस्य को जानकर आज मनुष्य अश्लील प्रसारण, सहशिक्षा, फैशन, टी.वी. पर गन्दे नृत्य व गाने, भयंकर नशेरूप विष व विषयों को ग्राह्य मानकर जीवन नष्ट कर रहा है। शराब पीकर घर व भूमि को कौड़ियों के भाव बेचकर भिखारी बन रहा है। अतः पाप से सदैव बचना चाहिए।

—आचार्य बलदेव

जन्माष्टमी महोत्सव सम्पन्न

दिनांक 17 अगस्त को भऊ आर्यपुर (रोहतक) के गोशाला में जन्माष्टमी महोत्सव सम्पन्न हुआ। यज्ञ में अनेक परिवार सम्मिलित हुए। यज्ञ के उपरान्त आचार्य वेदमित्र जी व श्री धर्मपाल जी आर्य ने अपने विचार रखे। आचार्य जी ने कहा कि गाय के पञ्चगव्य के कारण भारत की 33 करोड़ की जनसंख्या जब थी तब उनका उत्तम पालन-पोषण होता था। गाय के पंचगव्य से शुद्ध मन तथा स्वस्थ शरीर वाले बलिष्ठ योद्धा यहाँ घर-घर पैदा होते थे। कार्यक्रम में दूर-दूर से दानी महानुभाव सम्मिलित हुए।

पर्यावरण एवं विश्व-कल्याण हेतु

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ (18 अगस्त से प्रारम्भ)

स्थान 1051, सैक्टर-1 (नजदीक मार्किट सैक्टर-1), रोहतक

यज्ञ-ब्रह्मा-**आचार्य वेदमित्र**

संचालक-वैदिक योगाश्रम, भऊ आर्यपुर (रोहतक)

यजमान बनने हेतु सम्पर्क करें—09355675408

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

—आचार्य बलदेव

स्वास्थ्य चर्चा...

मानसिक तनाव व उससे छुटकारा पाने के उपाय

चिन्तायें मानसिक तनाव पैदा करती हैं। दैनिक जीवन में हमें नाना प्रकार की चिन्तायें करनी पड़ती हैं। हम चिन्ता से कितने दुःखी होते हैं, यह हमारी प्रकृति और सहनशीलता पर निर्भर होता है। एक व्यक्ति बड़ी से बड़ी चिन्ता की परवाह नहीं करता तो दूसरा व्यक्ति जरा-जरा-सी बातों पर चिन्तित और अधीर हो उठता है, जो भी हो हम सभी चिन्ता का कारण उसे समझते हैं, जिसके विषय में चिंतित होते हैं, लेकिन हमारी भूल है, नासमझी है, क्योंकि हम जरा-सा गहरा सोच विचार करें तो चिन्ता का मूल कारण दूसरा ही पायेंगे। इसे जरा समझें। हम जो भी काम चिन्ता के साथ करेंगे एक तो वह आत्मविश्वास के अभाव में दुविधापूर्ण स्थिति में किया जाएगा कि मालूम नहीं काम हो पायेगा या नहीं हो पायेगा। इससे हमारी कार्यक्षमता और कार्य पद्धति नष्ट हो जाएगी। जबकि हमारे वश में सिर्फ काम करना ही होता है। कर्म का फल हमारी इच्छा के अनुसार ही मिले यह हमारे हाथ में नहीं होता वरना संसार में सभी अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार ही फल प्राप्त कर लिया करते। वे किसी भी समय चिन्ता नहीं करते। जैसे माता-पिता पर निर्भर रहने वाले बच्चे की चिन्ता माँ-बाप किया करते हैं, पर जब सयाना होकर वह बच्चा आत्मनिर्भर होकर अपनी चिन्ता खुद कैसे करने लगता है, तब माता-पिता उसकी उतनी चिन्ता या क्लेश से घिरे हों तो उसे आप अपने मन में न रखें। उसे बात चीत के माध्यम से अपने मित्रजनों से कहें, क्योंकि इससे चिन्ता जैसी स्थिति आने से पहले उसका निवारण हो जायेगा और सामने वाला व्यक्ति आपकी चिन्ता को दूर करने में आपकी मदद कर सकता है व उसके सहानुभूति के कुछ शब्द आपको मानसिक राहत पहुँचा सकते हैं। अपना समय अकेले में न बिताएं ताकि मस्तिष्क एक ही ओर केन्द्रित न रहे, संगीत आदि के कार्यक्रमों, संग्रहालयों एवं पुस्तकालयों में जायें। मन कुछ भी न करने की चाह रहा हो तो टहलें, अखबार इत्यादि पढ़ें। अपना ध्यान किसी प्रकार विकेन्द्रित कीजिए। अगर रात्रि में आराम से नींद नहीं आ रही हो तो लघु कथाएं, हल्की-फुल्की कहानियाँ सुनें। इससे आपका मन हल्का होगा और तनाव से मुक्ति मिलेगी। सोते समय न तो दिनभर के कार्यों में स्वयं को उलझायें। जीवन में अभाव होने से भी मानसिक तनाव उत्पन्न हो सकता है। सुख ही सफल जीवन की कुंजी है। सुख में व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने से ऊपर वाले व्यक्ति को देखे और ऊपर बढ़ने को प्रगतिशील रहे। दुःख में अपने से नीचे वाले की ओर देखे तभी आपको संतुष्टि प्राप्त हो सकती है। जब आपके पास कार्य की अधिकता हो तो कार्य को देखकर घबरायें नहीं अपितु एक-एक कार्य को उसकी महत्ता और प्राथमिकता के आधार पर निपटाते जायें। अपने विचारों में परिवर्तन लायें। छोटी-छोटी बातों को स्थान न दें। जब आप निरन्तर मानसिक कार्य करते-करते थकान महसूस करने लगें तो तत्काल कोई शारीरिक कार्य करना प्रारम्भ करें। इस प्रकार कार्य परिवर्तन मानसिक राहत व शान्ति पहुंचाता है। तनाव से छुटकारा पाने का एक सरल तरीका है। व्यक्ति को ज्यादा जिद्दी व गुस्सा नहीं करना चाहिए। व्यक्तित्व सौंदर्य का पूरा आनन्द लें। इससे मन को बड़ी राहत मिलती है। उपर्युक्त तरीकों को अपनाकर मानसिक तनाव को कम करने में आप निश्चित रूप से सफल हो सकते हैं। आज के आधुनिक समाज में मानसिक तनाव को कम नहीं किया गया तो वह हमारे लिए जानलेवा सिद्ध हो सकता है। अतः चिन्ता कम से कम करें, चिन्तन अधिक से अधिक कीजिए।

हर कोई मुस्कान मांगे आपसे,
हर पल खुशबू मांगे आपसे,
खुदा करे कि आपकी जिंदगी में,
इतनी रोशनी हो कि बिजली वाले
भी, कनेक्शन मांगे आपसे।

—सोनू कुमार, सहायक डाक्टर
मो० 9719433851

वैवाहिक विज्ञापन

क्या आपको योग्य वर-वधू की तलाश है?

तो फिर भला देर किस बात की? आज ही वैवाहिक कालम में अपना विज्ञापन भेजिए। एक बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु० 250/- तथा तीन बार में 700/- अपेक्षित है। धन्यवाद।

सम्पादक—आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' दयानन्दमठ, रोहतक

दूरभाष : 01262-216222

thearyasamaj.org

स्वाधीनता व गणतंत्र दिवस नहीं राष्ट्र-दिवस मनाया जाए

❑ महावीर 'धीर', 21/1227, प्रेमनगर, हैफेड रोड, रोहतक 9466565162

भारत विश्व का प्राचीनतम देश है। भारत की कालगणना 1960853113 है। इतने लम्बे समय में अंग्रेजों का भारत पर शासन का समय लगभग 150 वर्षों के मुक्ति संघर्ष की कहानी ही बताई जाती है। वह भी इस प्रकार से जैसे दो अरब वर्षों से यह देश परतन्त्र ही था और 15 अगस्त 1947 को इसने स्वाधीनता प्राप्त की। मेरा अभिप्राय यह कतई नहीं है कि अंग्रेजों के मुक्ति संघर्ष का कोई महत्त्व नहीं और इस मुक्ति के महान् योद्धाओं को याद न किया जाए। इस मुक्ति संग्राम के बलिदानियों का ऋण हम सात जन्मों में भी नहीं उतार सकते। उनका स्मरण भारत राष्ट्र के लिए नितान्त आवश्यक है। लेकिन मेरा कहना यह है कि राष्ट्र के नागरिकों को अंग्रेज मुक्ति संग्राम के योद्धाओं के साथ-साथ राष्ट्र के उन महान् आदर्श राजाओं और विद्वानों को भी इस दिन स्मरण करना चाहिए जिनके कारण भारत राष्ट्र विश्वगुरु रहा, जिन्होंने मानव मात्र के सुख के लिए आयुर्वेद, धनुर्वेद, यत्र सर्वस्व छन्दः शास्त्र, नाट्यशास्त्र, वेद, उपनिषद्, दर्शनों की रचना की। जो राजा यह दावा कर सके कि 'यह देश संसार का पूर्वज है। धन-धान्य, ज्ञान-विज्ञान और शारीरिक शक्ति व चरित्र में सिरमौर है। पृथिवी के सभी लोग इस देश के नागरिकों से सब प्रकार की शिक्षा ग्रहण करें।' जिन्होंने यह दावा भी किया और घोषणा की कि मेरे राज्य में कोई अशिक्षित, अपराधी, चोर, कर्त्तव्यहीन, नशेड़ी, दुश्चरित्र नहीं है। सभी प्रातः सायं यज्ञ-भजन करते हुए मानवता व राष्ट्र के प्रहरी रहते हुए आनन्दित हैं।

भारत के पूरे इतिहास की झलक दिखाने वाला यह कार्यक्रम तभी सार्थक बन सकता है जब स्वाधीनता और गणतन्त्र दिवसों को समाहित करके हम 'राष्ट्र-दिवस' के रूप में इसे मनाएं। यह भी जरूरी नहीं है कि हम 15 अगस्त या 26 जनवरी को ही 'राष्ट्र-दिवस' मनाएं। अन्य इनसे भी उत्तम दिन यदि कोई माना जाए तो उस दिन यह 'राष्ट्र-दिवस' मनाया जा सकता है। ऐसा सर्वोत्कृष्ट दिवस चैत्र प्रतिपदा शुक्ला हो सकता है या वैशाख का कोई दिन। वैशाख में फसलों का काम पूर्ण हो जाता है। अन्न खेत-खलिहान से घर पर आ जाता है। प्राचीन समय से भारतीय इतिहास में चैत्र प्रतिपदा का विशेष महत्त्व रहा है। विशेष कार्य चैत्र प्रतिपदा से ही आरम्भ किए जाते थे। नए राजा का राज्याभिषेक प्रायः चैत्र प्रतिपदा को ही होता था। मर्यादा पुरुषोत्तम राजा श्री रामचन्द्र जी का राज्याभिषेक 'दीपावली' के दिन नहीं हुआ था लेकिन उनको दीपावली के दिन याद किया जाता है। दीपावली श्रीराम के राज्याभिषेक से पूर्व भी मनाई जाती थी। महाराज दशरथ ने भी दीपावली मनाई थी। रावण चैत्र शुक्ल चतुर्दशी को मारा गया था। तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है कि-'**चैत्र शुक्ल चौदस जब आई। मर्‌यो दशानन जग दुखदाई।।**' लेकिन 'रावण-वध' को 'दशहरा' के साथ जोड़ा गया है। वर्षा ऋतु के बाद इस दिन सेनाएं युद्धाभ्यास के बाद दशों दिशाओं में सुरक्षा कार्य संभालती थी। दशहरा से पूर्व नौ दिन तक दशों इन्द्रियों को जीतने के लिए नवरात्रों में उपवास, व्रत, ध्यान-यज्ञ, पूजन, भजन-कीर्तन किए जाते हैं, दसवें दिन दशहरा 'रावण-वध' के रूप में मनाया जाता है अर्थात् दशों इन्द्रियों की बुराई हरण के बाद ही दशों दिशाओं की बुराई रूप शत्रु (मानवता विरोधी तत्त्व) का हरण सही रूप से होता है। इसलिए नौ दिन संकल्प के बाद युद्धाभ्यास होता था, लेकिन लगता है कि आदर्श राजा राम को स्मरण करने के लिए नवरात्रों में रामकथा रामलीला के रूप में प्रचलित हुई। यह शोध का विषय है लेकिन हमें स्वतन्त्रता व गणतंत्र दिवसों को समाहित करते हुए 'राष्ट्र-दिवस' उपयुक्त समय पर प्रतिवर्ष आयोजित करना चाहिए। छोटे से देश बहरीन में स्वतंत्रता दिवस के स्थान पर 'राष्ट्र-दिवस' मनाया जाता है।

स्वतन्त्रता और गणतंत्र दिवसों पर प्रश्नचिह्न

बहुत से प्रतिष्ठित व्यक्ति यह मानते हैं कि भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं मिली। देश को भारत स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 के अनुसार डोमिनीयन स्टेट के रूप में कुछ क्षेत्रों में आजादी दी गई है। जैसे—संसद व विधानसभाओं का निर्माण, चुनावों में मत का अधिकार, वायसराय की जगह राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री के पद सृजित करना आदि। संविधान के प्रायः सभी नियम 1932 के ब्रिटिश कानूनों के रूप में ज्यों के त्यों रखे गए हैं जो कि भारतीय जनता के लिए लगातार अभिशाप बने हुए हैं। जनता को वकील व न्यायालय मिलकर लूट रहे हैं। 40-40 वर्षों में निर्णय आते हैं लेकिन न्याय फिर भी नहीं मिलता। भाषा, शिक्षा, संस्कृति, खान-पान, वेश-भूषा, सबके सब राष्ट्र-विरोधी हैं। भारत की प्रत्येक नीति, नियम, व्यवहार, शिक्षा, संस्कृति, खान-पान धर्म प्रेरित हैं। धर्म जहां सच्चाई, विश्वसनीयता, प्रकृति, जीव-जन्तु व मानव में सर्वहितकारी सहयोग का नाम है। धर्मशाला, धमार्थ औषधालय, धर्मकांटा शब्द इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं।

आज के धर्मनिरपेक्ष कहे जाने वाले व्यक्ति तो पूछेंगे कि किस धर्म का कांटा है, किस धर्म की शाला या औषधालय है ? उन पढ़े-लिखे अनपढ़ों को पता ही नहीं धर्म किस चिड़िया का नाम है ? हमारे यहां बाह्यचिह्नों को '**न लिंगं धर्मकारणम्**' कहकर नकारा गया है। लेकिन आज पूजा पद्धतियों को धर्म कहा जा रहा है। ''हम जैसे व्यवहार की दूसरों से अपेक्षा करते हैं वैसा ही दूसरों से हम व्यवहार करें, इसे धर्म माना गया है।'' ''धैर्य, क्षमाशीलता, सत्य, क्रोध न करना, अपनी प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखना, दूसरों की वस्तु के प्रति न ललचाना, न ही बिना पूछे लेना, सफाई रखना (शरीर, वस्त्र, घर व पर्यावरण), मन आदि इन्द्रियों को वश में रखना, बुद्धिपूर्वक कार्य करना, विद्याप्राप्ति आदि सद्‌गुणों को धर्म कहा गया है।'' इस गणतंत्र की सबसे बड़ी बुराई-'धर्मनिरपेक्षता' है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि यह गणतन्त्र ऊपर वर्णित धर्म को नहीं मानता। भला इस धर्म मार्ग को छोड़कर गणतंत्र कैसे चलेगा ? 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द का दूसरा अभिप्राय-'मतनिरपेक्ष' शासन से है अर्थात् कोई किसी के मत-पंथ में बाधक न बनें न ही शासन को किसी मत-पंथ से कुछ लेना-देना है। कोई कुछ भी मत-पंथ माने या नया चलाए। शासन न सहयोग करेगा, न बाधक बनेगा। भला ऐसा क्यों ? जिस मत-पंथ से प्रजा में अलगाववाद, अंधविश्वास, अज्ञानता बढ़े उसे क्यों पनपने दिया जाए ? इस गणतन्त्र को स्थापित करने में बड़ा भारी छल, मूर्खता या सत्ता लोलुपता हुई है। जैसे-तैसे सत्ता पाकर इसे भारी विसंगतियों के रहते गणतंत्र घोषित कर दिया गया है। जब कांग्रेस और गांधी जी 'द्विराष्ट्र-सिद्धान्त' को नहीं मानते थे तो उन्होंने देश का बंटवारा स्वीकार क्यों किया ? भले ही गांधी जी ने बंटवारे के बारे में हुई बैठक में बंटवारे के प्रति असहमति व्यक्त की, लेकिन बंटवारे को रोकने के लिए कुछ भी दबाव नहीं बनाया। यदि वे बंटवारा नहीं चाहते तो बंटवारा नहीं हो सकता था। नेहरू पटेल की क्या हैसियत कि वे गांधी जी के सिर पर खेलते। यह तो नेहरू को सत्ता पर बैठाने की सुनियोजित तरकीब प्रतीत होती है। सारे प्रकरण को देखते हुए स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि गांधी जी केवल यह दिखाना चाहते थे कि मैं बंटवारे के लिए सहमत नहीं हूं, लेकिन अन्दर से वे चाहते थे कि भले ही बंटवारा हो जाए लेकिन प्रधानमंत्री नेहरू बन जाए बस।

तत्कालीन सर्वसमृद्ध प्रान्त पंजाब के मंत्री चौ. छोटूराम के जीवन चरित में लेखक रघुवीर सिंह लिखते हैं कि गांधी जी के दामाद व कांग्रेस के मान्य नेता राजगोपालाचारी ने बयान दिया कि जब मुसलमान हिन्दुओं के साथ नहीं रहना चाहते तो उन्हें अलग रहने की इजाजत दे देनी चाहिए और इसके लिए फार्मूला पेश कर दिया। तो बहुत सारे देशभक्त कांग्रेसियों ने राजगोपालाचारी को जली-कटी बातें सुनाई, लेकिन महात्मा कहे जाने वाले गांधी जी ने सबको यह कहकर चुप करा दिया कि 'बोलने का अधिकार सबको है।' राजगोपालाचारी की समिति ने ही बंटवारे में जिलों को इधर-उधर रखने का प्रारूप तैयार किया था। तब चौ. छोटूराम ने पंजाब की ग्रीष्मकालीन राजधानी शिमला से एक ऐतिहासिक पत्र गांधी जी को लिखा था कि ''किसी भी कीमत पर बंटवारे को स्वीकार न किया जाये नहीं तो यह क्षेत्र सदा-सदा के लिए युद्धों का क्षेत्र बन जाएगा तथा इंग्लैण्ड जैसे देश पाकिस्तान को मोहरा बनाकर अपने खेल खेलेंगे। आप लोग आजादी (सत्ता) के लिए उतावले न हों। यदि कुछ देर में भी आजादी मिले तो बंटवारे की आजादी से हर तरह अच्छी होगी...। क्षेत्र के लोगों को अचल सम्पत्ति समझ इधर से उधर करने की बजाय लोगों की राय ली

शेष पृष्ठ 5 पर....

thearyasamaj.org

शहीद सुमेरसिंह आर्य का बलिदान दिवस (24 अगस्त, 1957)

शहीद सुमेरसिंह आर्य का जन्म ग्राम नयाबांस, सांपला के निकट जिला रोहतक (हरयाणा) में माता श्रीमती ज्वालादेवी एवं पिता श्री प्रभुदयाल आर्य (टांक राजपूत) के घर 10 अगस्त 1929 को हुआ था। वह पाँच भाई तथा दो बहनें थे। उन्होंने सांपला के विद्यालय में मिडल कक्षा तक उर्दू की शिक्षा प्राप्त की थी। विद्यार्थी जीवन में वे पूज्य आचार्य भगवान्देव जी (पूज्य स्वामी ओमानन्द) एवं पूज्य पं० दादा बस्तीराम जी के आर्यसमाज के प्रचार से बहुत प्रभावित थे। तत्पश्चात् उन्होंने हिन्दी पढ़ना आरम्भ कर राष्ट्रभाषा रत्न एवं प्रभाकर तक शिक्षा ग्रहण कर ली और पूर्णरूप से आये साहित्य का स्वाध्याय करने लगे तथा सन्ध्या-हवन (यज्ञ) मौखिक रूप से कराते थे। सत्यार्थप्रकाश, मनुस्मृति, संस्कारविधि, वेद तथा उपनिषदों का स्वाध्याय करते थे। प्रतिदिन प्रात: 4 बजे उठकर व्यायाम, प्राणायाम, सन्ध्या करते थे। इसी दौरान आपने टेलरिंग का सारा कार्य सीख लिया था। फिर भी सारे कार्य को छोड़कर आर्यसमाज के कार्य में जुट गए थे अपने गांव नयाबांस में पूज्य आचार्य भगवान्देव जी के आशीर्वाद से आर्यसमाज की नयाबांस शाखा के मंत्री चुने गए। इससे कुछ समय पूर्व खतौली जिला मुजफ्फरनगर में श्री सुमेरसिंह आर्य व उनके अनुज ने टेलरिंग की दुकान खोल रखी थी। उनके दूसरे भाई श्री ओमप्रकाश व लक्ष्मण सिंह आर्य भी वहीं पर काम करते थे। खतौली कस्बे में श्री बोंदूसिंह वाल्मीकि जी का एक मशहूर अखाड़ा था जिसमें दोनों भाइयों ने लाठी, गदका तथा नंगी तलवार चलाने की शिक्षा ग्रहण की। खतौली में आर्यसमाज का पूरा सम्पर्क रखते हुए आप आर्यवीर दल खतौली शाखा के संचालक नियुक्त किए गए।

कुछ दिन पश्चात् टेलरिंग का कार्य छोड़कर पूरा समय आर्यसमाज की नि:स्वार्थ रूप से सेवा करने की प्रतिज्ञा कर ली व अपने गांव में वापिस आ गए। विवाह करने से साफ इंकार कर दिया व पूरा जीवन ब्रह्मचारी रहकर समाज की सेवा करने लगे। आप बलवान, बुद्धिमान् व आत्मविश्वासी थे। कुछ समय पश्चात् पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज यमुनानगर के आह्वान पर हिन्दी सत्याग्रह का बिगुल बज गया। आपने अपने गांव के जत्थे का नेतृत्व किया तथा गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी बलदेव जी के जत्थे के साथ मिलकर पूज्य आचार्य भगवान्देव के आह्वान पर चंडीगढ़ में सत्याग्रह किया और 24 अगस्त, 1957, सवा चार बजे सायं फिरोजपुर जेल में भयंकर लाठीचार्ज हुआ। पूज्य स्वामी करपात्री जी को बचाते हुए हाथ में सत्यार्थप्रकाश लिए हुए वीरगति को प्राप्त हो गए। हमने उनका शव देखा तो उस पर लाठियों के 30 निशान थे।

वीर शहीद मेहरसिंह आर्य के अनुज मेहरसिंह आर्य की कलम से

मैं (मेहरसिंह आर्य) उस समय दिल्ली में था। 25 अगस्त 1957 को प्रात:काल मैंने 'प्रताप' समाचार-पत्र पढ़ा। उसमें मुखपृष्ठ पर मोटी खबर छपी थी कि फिरोजपुर जेल में हिन्दी सत्याग्रहियों पर जबरदस्त लाठीचार्ज हुआ जिसमें गांव नयाबांस के सुमेरसिंह आर्य की मौके पर ही मृत्यु हो गई और बहुत लोगों को गंभीर चोटें आई हैं। इस समाचार को पढ़कर मैंने सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में फोन से जानकारी प्राप्त की। श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी ने मुझे बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी अभेदानन्द जी महाराज नयाबांस चले गए हैं। मैंने अपने बड़े भाई वीर शहीद सुमेरसिंह के शव का स्वागत के लिए काफी फूल-मालाएँ लीं और अपने गाँव नयाबांस, जिला रोहतक के लिए चल दिया। गांव के लगभग चार फरलांग पहले नहर के पुल पर भारी संख्या में पुलिस का पहरा था। गांव की ओर किसी को भी जाने नहीं दिया जा रहा था। मुझे भी पुलिस ने रोक लिया परन्तु जब मैंने बताया कि मैं सुमेरसिंह आर्य का छोटा भाई हूँ तो पुलिस अपनी निगरानी में मुझे मेरे घर तक ले गई। हमारे घर के सामने तथा पूरा गांव एकत्र था। उस दिन पूरे गांव में किसी के घर में चूल्हा नहीं जला था। गांव के चारों ओर बड़ी संख्या में पुलिस गस्त कर रही थी। सायंकाल हो चुका था, जहाँ वीर सुमेरसिंह का शव रखा था वहां पुलिस की पूरी छावनी तैनात थी। गांव के लोग गंडासे, जेली आदि लेकर क्रान्ति पर उतारू थे। आस-पास के गांवों के लोग ढोल बजाकर गांव नयाबांस की ओर जाने की तैयारी कर रहे थे। इस खतरनाक व नाजुक स्थिति को देखते हुए मैंने अपने गांव की चौपाल की ब्रिज पर चढ़कर लोगों को शांत किया। मैंने स्वामी अभेदानन्द जी की खोज की तो पता चला कि स्वामी जी को पुलिस ने अपने कब्जे में किया हुआ था। रात बहुत हो चुकी थी, स्वामी जी से किसी को मिलने नहीं दिया गया तथा पुलिस मेरे पिताजी को धमकाकर दबाव डाल रही थी कि शव का अंतिम संस्कार अभी कर दो वरना हम खुद शव पर मिट्टी का तेल डालकर आग लगा देंगे। मैंने पुलिस वालों से कहा कि मुझे स्वामी अभेदानन्द जी से मिलने दें तो हम वीर सुमेरसिंह के शव का अंतिम संस्कार करने पर विचार कर सकते हैं।

पुलिस के भारी घेरे के बीच मुझे स्वामी जी से मिलाया गया। मैंने उन्हें अपना परिचय देकर पूछा कि स्वामी जी क्या आज्ञा है? स्वामी जी ने कहा कि मैं काफी देर से कह रहा हूँ कि लाश की अन्त्येष्टि रात को नहीं करेंगे। मैंने पूज्य स्वामी जी को बताया कि आप पुलिस के घेरे में हैं, आपको किसी से मिलने नहीं दिया जा रहा है। उस समय बहुत रात हो चुकी थी और बरसात भी हो रही थी। पुलिस मुझे घसीटकर वापिस ले आई। हमने अपने घर पर हवन करना आरम्भ कर दिया। बरसात में सारा गांव भीगता हुआ हमारे घर के आस-पास खड़ा था। उसी समय पुलिस का एक दल हमारे घर पर आकर गालियाँ देने लगा और धमकाने लगा कि लाश प्राप्ति फार्म पर हस्ताक्षर करो और लाश को अभी जलाओ अन्यथा हम स्वयं मिट्टी का तेल डालकर आग लगा देंगे। उसी समय मेरी धर्मपत्नी श्रीमती कपूरी देवी आर्या ने एक थानेदार का गला पकड़कर दो तमाचे जड़ दिए और कहा कि तुम्हें पता नहीं है कि शहीदी परिवार खूंखार भी होता है। काफी गर्मागर्मी के बाद मामला कुछ शान्त हुआ परन्तु पुलिस वाले मुझे पकड़कर घर के पास की चौपाल में ले गए और मुझे धमकाने लगे। उसी समय एक हवलदार जो हरियाणावासी दिखाई दे रहा था, ने अपनी बेल्ट खोलकर अधिकारी के सामने फैंकते हुए कहा कि अब मुझसे और अधिक नहीं देखा जा सकता है, जुल्म की हद हो चुकी है। आपको यह पता नहीं है कि चारों ओर के सभी गांववासी ढोल बजाकर लाठी, जेली, गंडासों आदि से लैस हुए खड़े हैं। यदि आपने लाश को जबरन आग लगाई तो यहाँ लाशों के ढेर लग जायेंगे। इसके पश्चात् मामला कुछ शान्त हुआ। रात के दो बज चुके थे, कुछ देर के बाद हमें वीर सुमेरसिंह का शव देने का आदेश हुआ। हमारे परिवार के अलावा किसी को भी पुलिस छावनी में प्रवेश नहीं करने दिया गया। मैं (मेहरसिंह आर्य) और मेरे पिताजी तथा मेरे भाई चारपाई पर एक पतली-सी चादर में लिपटी लाश को लेकर घर आए और 26 अगस्त 1957 की प्रात:काल शव का अंतिम संस्कार किया गया। चारों ओर के गांवों के नर-नारी ढोल-नगाड़ों के साथ शहीद सुमेरसिंह जिन्दाबाद का जयघोष करते हुए लाखों की संख्या में जमा हो गए तथा प्रचुर मात्रा में घी, सामग्री एवं लकड़ियाँ लेकर आ रहे थे। महाशय अर्जुनदेव दहकोरा निवासी तथा महाशय महासिंह आर्य लाढौत और पूज्य स्वामी जी अभेदानन्द जी महाराज तथा आर्यसमाज के सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र के लोगों का समूह आ रहा था। शहीद सुमेरसिंह जिन्दाबाद के नारों से आकाश गूंज रहा था।

दाह-संस्कार करने के बाद जब हम घर पर आए तो उसके थोड़ी देर पश्चात् पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा प्रेषित एक पत्रिका प्राप्त हुई। उसमें लिखा था कि मुझे हरयाणा के प्रत्येक घर में एक रुपया और एक व्यक्ति जेल के लिए चाहिए जिससे हिन्दीभाषा की रक्षा हो सकती है। यह लेख मेरी पूज्या माताजी श्रीमती ज्वालादेवी भी सुन रही थीं।

उन्होंने तुरन्त कहा कि हमारे घर से अब कोई भी जेल में नहीं रहा। हम चारों भाइयों ने माँ का आशीर्वाद लेकर कहा कि आपके बेटे जरूर जेल में जायेंगे। 29 अगस्त 1957 को मैंने छुपकर अपना जत्था तैयार कर सत्याग्रह के लिए प्रस्थान किया। मेरी माता जी, पिता जी, चाचा जी व बड़े भाई ने मुझे आशीर्वाद दिया और मेरे पूज्य पिताजी श्री प्रभुदयाल आर्य मुझे सहारनपुर तक स्वयं छोड़ने आए। मैं अपने 19 सत्याग्रहियों के जत्थे के साथ चंडीगढ़ सैक्टर-22 के आर्यसमाज मंदिर में पहुंचकर सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार हुए। मुझे मेरे जत्थे के साथ अंबाला जेल भेज दिया गया और काफी दिनों के बाद पटियाला जेल भेज दिया गया। आन्दोलन की समाप्ति पर जेल से छूटकर आए।

thearyasamaj.org

स्वाधीनता व गणतन्त्र दिवस नहीं.... पृष्ठ 4 का शेष.....

जानी चाहिए कि वे अपना स्थान छोड़ना चाहते हैं या नहीं ?'' जिन्ना की सीधी कार्यवाही पंजाब में वहां के मंत्रिमंडल ने नहीं चलते दी। खाकसारों (आत्मघातियों) को सिर उठाते ही जेलों में डाला गया, लेकिन बंगाल में खाकसारों ने खुला खेल खेला। कांग्रेस ने और गांधी जी ने उस समय तनिक भी कठोरता व साहस नहीं दिखाया। जिस महात्मा ने सुभाष को कांग्रेस से बाहर होने को विवश किया, जिसने भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां जैसे महान् देशभक्तों व मानवतावादियों के जीवन से अपनी आंखों के सामने खिलवाड़ होने दिया, जिसने स्वामी श्रद्धानन्द के हिन्दू-मुस्लिम एक करने के अभियान 'शुद्धि-आन्दोलन' का विरोध कुछ कट्टरपंथियों के कहने से किया और उन्हें कांग्रेस छोड़ने को विवश किया। जिसने जिन्ना जैसे सच्चे देशभक्त व धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति को भी अंतराष्ट्रीय ढंग से मुसलमानों को 'खिलाफत आन्दोलन' द्वारा तुष्टिकरण करके उनका नेता बनने की चाह द्वारा मुस्लिम लीग में जाने को मजबूर किया और फिर उसकी टक्कर भी नहीं झेल पाया। एक प्रान्त के मंत्री (चौ. छोटूराम) में इतना साहस कि उसके रहते जिन्ना पंजाब में नहीं घुस सका, लेकिन पूरी कांग्रेस के अनेक प्रान्तों में सरकार के रहते यह जिन्ना के खाकसारों को नहीं कुचल सकी। ऐसा सोच भी नहीं सकी और कट्टरपंथियों के सामने देश को लाचार बना दिया। देश के अनेक साहसी, विवेकशील, उज्ज्वल व्यक्तियों को दरकिनार कर कांग्रेस के मंच पर दहाड़ने वाले महात्मा की वह दृढ़ता एक कट्टरपंथी को टक्कर क्यों नहीं दे पाई ? क्यों नहीं उसने बंटवारे को रोकने और जिन्ना के विरुद्ध जन जागरण के लिए यात्रा निकाली ? क्यों नहीं कांग्रेस को देश के टुकड़े होने से बचाने के लिए कठोर आदेश दिया ? क्यों नहीं देश के सामने सबसे बड़े संकट के समय वह अनशन कर पाया ? उसने विभाजन समर्थक कांग्रेस तत्त्वों को क्यों नहीं दरकिनार किया ? देश का सबसे दृढ़ नेता माना जाने वाला वह 'महात्मा' यह कहकर ऐसी संकट की घड़ी में क्यों चुप हो गया कि 'मेरी कोई नहीं सुनता ?' भला गांधी किसी बात को जोर देकर कहे और वह अनसुनी कर दी जाए यह कैसे हो सकता था ?

स्पष्ट है कि सब गांधी जी की सहमति से हो रहा था। इसलिए यह बहाना बनाकर कि 'मेरी कोई नहीं सुनता' एक तरफ हो गया। जो कहता था कि 'पाकिस्तान मेरी लाश पर ही बन सकता है वह जिंदा ही रहा।' हां, लेकिन वह 'जिन्दा लाश' ही था। लेकिन दूसरी ओर दस लाख लोगों की सचमुख लाशें बिछ गई और वह महात्मा 'खूनी घाटी' बन चुके देश में जहां-तहां मुंह छिपाता हुआ घूमता रहा और लोगों में अपनी लाज बचाने की कोशिश करता हुआ लोगों को कहता रहा कि-'कहीं मत जाओ, यहीं रहो, कोई पाकिस्तान नहीं बना है।' यह महात्मा 'स्वतन्त्रता दिवस समारोह' में भी उपस्थित नहीं हुआ जो कि कहा जाता है कि इसने बिना खून-खराबे के आजादी दिलवाई थी। आता भी कैसे ? आता तो लोगों को क्या जवाब देता ? सो यह काम नेहरू के जिम्मे छोड़ उसे गद्दी पर बैठाकर अपना लक्ष्य पूरा कर चल दिया। जब गांधी जी ने ही 'स्वतन्त्रता दिवस' नहीं मनाया तो देश क्यों मना रहा है ? पटेल और अम्बेडकर जैसे लोगों ने कहा कि पूरी आबादी की अदला-बदली सुरक्षित रूप में की जाए लेकिन इस पर भी इस अहिंसा के पुजारी ने कोई ध्यान नहीं दिया।

जो मुसलमान भाई भारत में रह गए थे वे हालांकि कट्टरपंथी नहीं थे, लेकिन इसकी प्रिय और स्वतंत्रता दिलाने का दावा करने वाली इसकी पार्टी की नीतियां पूर्ववत जारी रही, जिसके परिणाम स्वरूप देश में कट्टरपंथी तत्त्व मजबूत होते जा रहे हैं। देश को फिर विभाजन के किनारे खड़ा कर दिया गया है लेकिन ये राजनेता आज भी राष्ट्रघातक नीतियों पर ही चल रहे हैं।

देश का प्रत्येक समझदार नागरिक इनसे पूछ रहा है कि क्यों हमें स्वतंत्रता व गणतंत्र के नाम पर आज तक बहकाया जा रहा है ? जाति और धर्म के नाम पर क्यों सुविधाएं बांटकर लोगों को बहकाया जा रहा है ? क्यों नहीं सबके लिए समान शिक्षा, रोजगार व न्याय की प्रणाली विकसित की जाती ? क्यों विदेशी कम्पनियों को भारी छूट देकर देश के रोजगार के अवसर समाप्त किये जा रहे हैं ? विदेशी विश्व-विद्यालयों, वकीलों और स्कूलों को क्यों स्थापित किया जा रहा है ? भारतीय भाषाओं, शिक्षा और संस्कृति को क्यों नष्ट किया जा रहा है ? 66 वर्ष में भी तुम इस देश को एक दृढ़ राष्ट्र के रूप में क्यों नहीं खड़ा कर सके ? तुम देश के सबसे बड़े अपराधी हो। ये अपराधी देश के टुकड़े-टुकड़े कर दें इससे पहले ही हमें तुरन्त खड़ा होना चाहिए। झूठे स्वतंत्रता व गणतंत्र दिवसों को मनाना छोड़कर देश को एक 'दृढ़ राष्ट्र' के रूप में खड़ा करने के लिए 'राष्ट्र-दिवस' मनाने की परम्परा डालने का 'महायत्न' करने के साथ 'राष्ट्र-निर्माण' के लिए सभी उपायों को अपनाने के लिए जन-जन का आगरण करना चाहिए। कोई भी विवेकशील व राष्ट्रभक्त नागरिक यह न सोचे कि मैं अकेला क्या कर सकता हूं ? आप अपने अन्दर झांको, अपने कर्त्तव्य पहचानो, कमियों को कम करते हुए समय का सदुपयोग करो। राष्ट्रपुत्रों, राष्ट्र तुम्हें संकट की घड़ी में पुकार रहा है, इसे बचा लो। भारत मां और मानवता को कपूतों ने घायल कर दिया है। इसका उपचार करो, वरना तुम्हारा अपराध भी इतिहास में लिखा जायेगा। विश्व के देश कहेंगे कि भारत का नागरिक गिर चुका था। वह स्वार्थी, सुविधाभोगी, कायर और किंकर्त्तव्य-विमूढ बन गया था, इसलिए भारत के टुकड़े हो गए तो कहां जाओगे ? चारों ओर से घेरकर तुम्हें ताश खेलते हुए, टी.वी. देखते हुए, गप्प हांकते हुए मार दिया जाएगा। तुम्हारी नादानी ने ही पूर्व और पश्चिम में, उत्तर और दक्षिण में तथा देश के अन्दर भी शत्रु बढ़ा लिए हैं।

सोचो, कैसे बचोगे ? तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को भाले और छुरे की नोंक पर टांगा जाएगा तब तुम कुछ भी नहीं सोच पाओगे, इतिहास में कहीं गुम हो जाओगे।

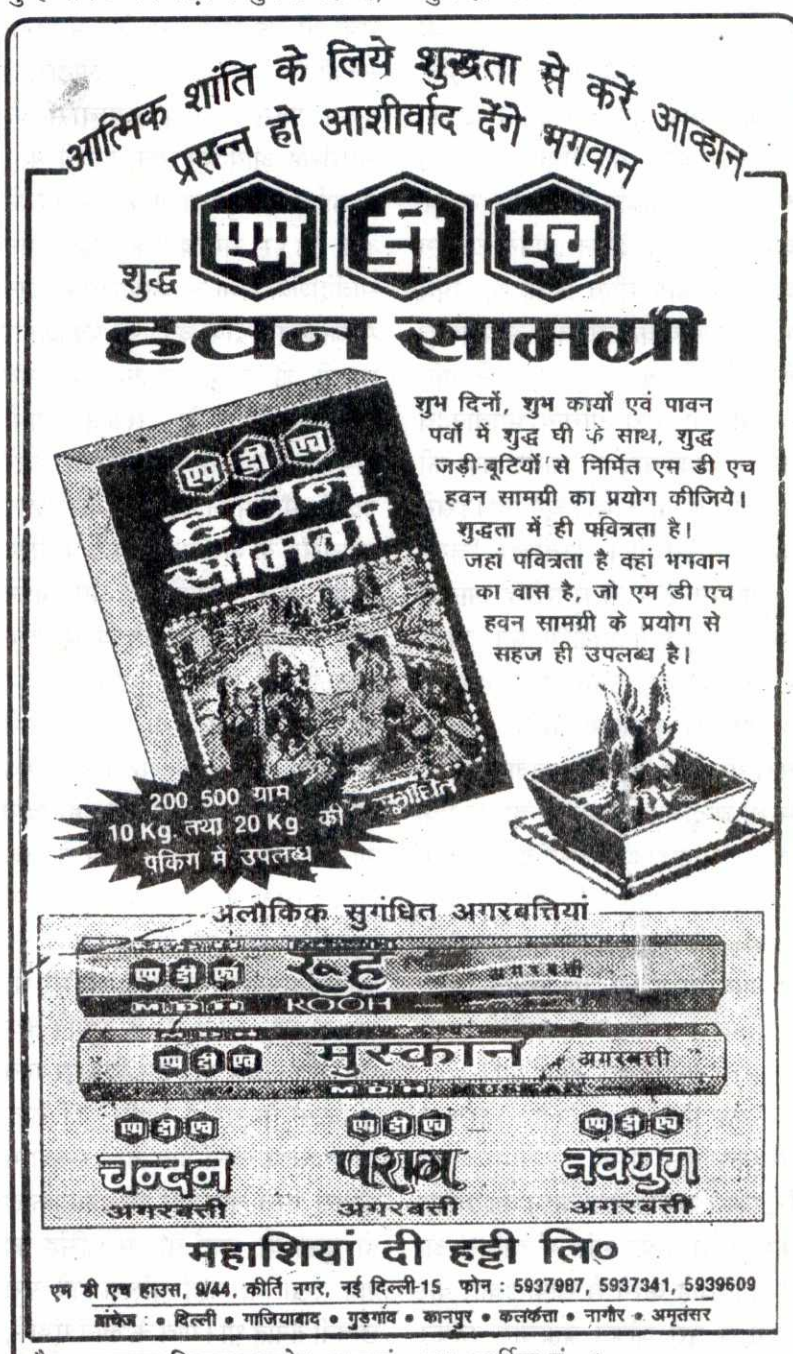

मै० **कुलवन्त पिक्कल स्टोर,** शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० **मेवाराम हंसराज,** किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० **मोहनसिंह अवतारसिंह,** पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० **ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार,** गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० **परमानन्द साईं दित्तामल,** रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० **राजाराम रिक्खीराम,** पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

thearyasamaj.org

आर्य-संसार

रक्षाबन्धन एवं श्रावणी पर्व पर वेदप्रचार का आयोजन

हिसार। गत वर्षों की भांति स्त्री आर्यसमाज (हिसार) रक्षाबन्धन श्रावणी पर्व को 29 जुलाई से 3 अगस्त 2014 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। स्वामी श्रेयोनन्द यति (दिल्ली) प्रतिदिन एक वेदमन्त्र की सरल शब्दों में व्याख्या की तथा जोर देकर लोगों को कहा कि पश्चिमी सभ्यता को छोड़कर वेदों की ओर लौटो। वेदमार्ग पर चलकर ही राष्ट्र का भला हो सकता है। स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। गुरुकुल आर्यनगर के मुख्याधिष्ठाता आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री ने त्रैतवाद ईश्वर, जीव, प्रकृति पर प्रकाश डाला।

इसके अतिरिक्त पं० अरुण आर्य (पंजाब), पं० उदयवीर आर्य (मथुरा) के प्रेरणादायक शिक्षाप्रद समाजसुधार के भजन हुये। युवा वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी ने कुशलता पूर्वक मंच का संचालन करते हुए राष्ट्र निर्माण एवं चरित्र निर्माण पर अपने विचार भी रखे। पर्व पर दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के छात्रों व गुरुकुल आर्यनगर के ब्रह्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। महिलाओं की हाजिरी रिकार्डतोड़ थी।

इस अवसर पर प्रतिदिन महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, सतपाल आर्य, प्रमोद लाम्बा, अवनीश आर्य, विनय मल्होत्रा, अजय एलावादी, संजय ठकराल, पं० सूर्यदेव पुरोहित, सीमा काठपाल, सुमन बत्रा, आदर्श गुट, साधना महता, कान्ता नागपाल, रामकुमार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल, सेठ सत्यप्रकाश मित्तल, श्री राजमल ढाका, बजरंगलाल आर्य, प्रिं० जिलेसिंह आर्य, पं० रविदत्त शास्त्री, पं० दयानन्द व्याकरणाचार्य आदि उपस्थित थे। प्रधाना शन्नो देवी ठकराल ने विद्वानों का प्रतिदिन धन्यवाद किया। 3 अगस्त को श्री ईशकुमार का सम्मान किया गया तथा पुष्पमालाओं के साथ शाल भेंट किया गया।

—महात्मा अत्तरसिंह स्नेही,
संरक्षक वेदप्रचारमण्डल हिसार
मो० 9466865351

आर्ष गुरुकुलों की छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए शीघ्र आवेदन भेजें

जो छात्र आर्ष ग्रन्थों के पढ़ने में रुचि रखते हैं, परन्तु आर्थिक कठिनाई अनुभव कर रहे हैं वे मध्यमा या शास्त्री कक्षा के छात्र अपना प्रार्थना-पत्र गुरुकुल के आचार्य के अनुमति पत्र से साथ मंत्री जी,

परम मित्र मानव निर्माण संस्थान, सैक्टर-14, रोहतक को संबोधित करते हुए निम्न पते पर शीघ्र भेजें। गुरुकुलों में आचार्यों से निवेदन है कि वे अपने एक योग्य छात्र का आवेदन शीघ्र भिजवायें।

भवदीय—स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, गुरुकुल आश्रम आमसेना

हरयाणा की समस्त आर्यसमाजें सभा की भजनमण्डलियों का लाभ उठावें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक सभा की भजनमण्डलियों के माध्यम से वेदप्रचार और आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार का कार्य उत्तम ढंग से किया जा सकता है। विशेष तौर पर हरयाणा की आर्यसमाजें अपने साप्ताहिक सत्संगों, वार्षिकोत्सवों और वेदप्रचार सप्ताह में इसका बहुत अच्छे ढंग से लाभ उठा सकती हैं। सभा में निम्नलिखित भजनमण्डलियां प्रचार कार्य कर रही हैं—

क्रम	नाम		मोबाइल नं०
1.	श्री सहदेव सरस भजनोपदेशक	—	09582142371
2.	श्री सत्यपाल आर्य भजनोपदेशक	—	9354824574
3.	श्री महेन्द्र आर्य भजनोपदेशक	—	9416344174
4.	श्री जसविन्द्र आर्य भजनोपदेशक	—	9991273589
5.	श्री चतरसिंह आर्य भजनोपदेशक	—	9812380029
6.	श्री रामेश्वर आर्य भजनोपदेशक	—	9416955090
7.	श्री स्वामी देवानन्द भजनोपदेशक	—	08800412687

आर्यसमाजें अपने वार्षिकोत्सव, वेदप्रचार सप्ताह तथा विशेष अवसर पर आयोजित समारोह में अवश्य आमन्त्रित करके वेदप्रचार को बढ़ाने में सहयोग प्रदान करें। —रामपाल आर्य, सभामंत्री

गायत्री (गुरुमन्त्र) का महत्त्व

❑ **स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा**

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

भूमि—अन्तरिक्ष दिऔ (द्यौ)' ये आठ अक्षर हैं। गायत्री के **'तत् स वि तु र्व रे णि यम्'**—इस एक पद में भी आठ अक्षर हैं। इसलिये गायत्री के प्रथम पद के अक्षर मानो भूमि-अन्तरिक्ष-द्यौ-ये तीनों लोक हैं। इस पद का उच्चारण करता हुआ तीनों लोगों का ध्यान करे। जो गायत्री के प्रथम पद को इस प्रकार जानता है वह तीनों लोकों में जितना प्राप्तव्य है उतना पा जाता है।

'ऋचः यजूंषि सामानि'—ये आठ अक्षर हैं। गायत्री के **'भ र्गो दे व स्य धी म हि'**—इस एक पद में भी आठ ही अक्षर हैं। इसलिये गायत्री के द्वितीय पद के अक्षर मानो ऋक्-यजु-साम-ये त्रयी-विद्या है। इस पद का उच्चारण करता हुआ वेद की त्रयी-विद्या का ध्यान करे। जो गायत्री के द्वितीय पद को इस प्रकार जानता है वह त्रयी-विद्या में जितना प्राप्तव्य है उतना पा जाता है।

'प्राणः अपानः विआनः (व्यान)' ये आठ अक्षर हैं। गायत्री के **'धियो यो नः प्र चो द या त्'** इस पद में भी आठ अक्षर हैं। इसलिये गायत्री के तृतीय पद के अक्षर मानो प्राण-अपान-व्यान-ये तीनों प्राण हैं। इस पद का उच्चारण करता हुआ तीनों प्राणों का ध्यान करें। जो गायत्री के तृतीय पद को इस प्रकार जानता है वह जितना प्राणि समुदाय में प्राप्तव्य है उतना पा जाता है।

गायत्री के तीन पदों की व्याख्या हो गई। गायत्री का एक 'तुरीय', 'दर्शत', 'परोरजा' पद भी है। 'तुरीय' का अर्थ है, 'चतुर्थ पद', 'दर्शत' का अर्थ है, 'जो दीखता-सा है'। 'परोरजा' का अर्थ है, 'प्रकृति से भी जो परे' है। गायत्री का यह प्रकृति से भी परे, दीखता-सा, चतुर्थ पद वही है, जो विश्व में तप रहा है—गायत्री के उसी चतुर्थ पद के प्रताप से वह निखिल-विश्व, एक के ऊपर दूसरा, मानो एक महान् तपस्या में लीन है। जो गायत्री के चतुर्थपद को प्रकृति से भी परे हो रही, देखती-सी, तुरीय-रूप प्रभु की तपस्या में देख लेता है, वह भी श्री और यश से तप उठता है, चमक उठता है।

गायत्री की प्रतिष्ठा अपने पहले तीन पदों में नहीं, इसी 'तुरीय', 'दर्शत', 'परोरज' पद में है और वह तुरीय-पद 'सत्य' में प्रतिष्ठित है। 'चक्षु' 'सत्य' है, 'चक्षु' ही 'सत्य' है, इसलिये जब दो व्यक्ति विवाद करते हुये आते हैं, एक कहता है मैंने देखा, दूसरा कहता है मैंने सुना, तो जो कहता है मैंने देखा, उसी की बात हम मानते हैं। गायत्री का 'दर्शत' नाम का चतुर्थ पद मानो प्रभु के उस चतुर्थ 'दर्शत' पद का स्मरण करा रहा है जो विश्व में तपस्या करता हुआ मानो आंखों से प्रत्यक्ष दीख रहा है। 'दर्शत' होने स यही उसका 'सत्य' पद है। 'सत्य' 'बल' में प्रतिष्ठित है—'सत्य' में ही तो 'बल' होता है, 'असत्य' में 'बल' नहीं होता। यह 'बल' क्या सिर्फ 'भौतिक बल' है? नहीं, 'बल' तो 'प्राण' है—इसलिये 'सत्य' 'बल' में और 'बल' प्राण में प्रतिष्ठित है, बिना प्राण-शक्ति के बल नहीं होता, तभी कहते हैं 'बल' 'सत्य' से बड़ा है। जिस प्रकार गायत्री आधिभौतिक-जगत् में, ब्रह्माण्ड में, उपासक को प्राण-शक्ति के महत्त्व को दर्शाती है, उसी प्रकार अध्यात्म में 'पिंड' में भी गायत्री की ऐसी प्रतिष्ठा है। 'गय' नाम प्राणों का है, क्योंकि यह शरीर के 'गय' अर्थात् प्राणों का त्राण करती है, इसलिये इसे गायत्री कहते हैं। गायत्री का ध्यान वास्तव में प्राणों का इन्द्रियों का-संयमन है। आचार्य उपनयन के समय ब्रह्मचारी को जिस सावित्री का उपदेश देता है वह यही गायत्री है गायत्री का उपदेश देने का यही अभिप्राय है कि शिष्य प्राणों की रक्षा करना, अपने भीतर नव-जीवन का संचार करना सीखता है।

अगर किसी को भरे हुये तीनों लोकों की प्राप्ति हो जाय, तो वह गायत्री के प्रथम-पद पाने के समान है, अगर किसी को त्रयी-विद्या की प्राप्ति हो जाय तो वह गायत्री के द्वितीय-पद पाने के समान है, अगर किसी को सम्पूर्ण प्राणि-जगत् की प्राप्ति हो जाय तो तृतीय पद पाने के समान है, गायत्री का जो 'दर्शत'-'तुरीय'-'परोरज' पद है, जो पद विश्व में तप रहा मानो दीखता है, इसकी तुलना तो किसी भौतिक-पदार्थ से नहीं की जा सकती। कहाँ से इतना लाये जिससे इसकी तुलना की जाय?

गायत्री (गुरुमन्त्र) की महिमा उपनिषदों में इस प्रकार वर्णित की है।

thearyasamaj.org

जीवन निर्माण की कुछ बातें

❑ पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक

शास्त्रों में मनुष्य देह परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति कही गई है, परन्तु अनेक मनुष्य इस अमूल्य मानव शरीर को प्राप्त कर भी इसका दुरुपयोग असत् कार्यों में करते देखे जाते हैं, ऐसे ही लोगों के लिये 'धरती का भार होने' की संज्ञा दी जाती है। पेड़-पौधे जंगल में भी होते हैं और उपवन में भी, फर्क यही होता है कि एक श्रेष्ठ माली उपवन के पौधों को एक श्रेष्ठ स्वरूप देता है और जंगल में झाड़-झंखाड़ के रूप में बढ़ते रहते हैं। इसी प्रकार मानव जीवन की भी बात है। शास्त्र प्रतिपादित श्रेष्ठ चिन्तनरूपी माली एक श्रेष्ठ जीवन का निर्माण करता है, इसके विपरीत जीवन तो अधोगति कराने वाला ही होता है। हम सबका जीवन श्रेष्ठ मानव जीवन बन सके इसी उद्देश्य से यहाँ जीवन-निर्माण की कतिपय बातें प्रस्तुत हैं—

(1) सोच सकारात्मक हो-कमरे अंधेरा हो तो अंधेरा लाठी से भगाने से नहीं भागेगा, न ही 'अंधेरा भाग जाओ, अंधेरा भाग जाओ' चिल्लाने से अंधेरा दूर हो जाएगा। कमरे में लगे बिजली के स्विच को ऑन कर देने से अंधेरा दूर हो जाता है। इसलिये कहा जाता है कि अन्धकार का कोई अस्तित्व नहीं होता। प्रकाश का अभाव ही अन्धकार है। प्रकाश करने से ही अज्ञान के अंधेरे से बाहर निकला जा सकता है। अन्धकार को धिक्कारने से नहीं वरन् एक दीप जलाने से अंधेरा दूर होगा।

(2) आध्यात्मिक बनें-जीवन में पीछे की ओर चलने से नहीं बल्कि आगे की ओर बढ़ने से मंजिल प्राप्त होती है। बात तब बनती है, दिल में इरादे अटल होते हैं। उत्साह तथा उल्लास को सदा प्रयत्न पूर्वक बढ़ाते रहना चाहिये। रोजाना पूर्व से उगता सूरज यह सन्देश लेकर आता है कि हमें हर घड़ी प्रभु का कार्य अर्थात् लोक कल्याण करना है। आत्मा की पुकार है। हर पल परमात्मा के साथ रहे। हमें बांसुरी की तरह पोला बनना है—अपने जीवन से अहंकार को हटाना है। तभी हमारे अन्दर से हमारे कार्य से प्रभु की इच्छा से भरा मधुर सुर प्रस्फुटित होगा और हमारा जीवन संगीत बन जाएगा। जिस प्रकार एक बच्चा अपने माँ-बाप को एक पल के लिये भी नहीं छोड़ना चाहता है, ठीक उसी तरह हमारा भी अपने आत्मा के माता-पिता (परमात्मा) से भी ऐसा प्यार होना चाहिए।

पं. नन्दलाल 'निर्भय'

(3) परमात्मा की लोक-कल्याण की इच्छा को अपनी इच्छा बनायें-हमें आत्मा की आवाज को सुनकर अनसुनी नहीं करना चाहिये। जिन्दगी हर पल हमारी परीक्षा लेती है। हम किस मिट्टी के बने हैं, इसकी कसौटी हर पल हमारे सामने होती है। परमात्मा ने सबको विशिष्ट बनाया है। हम सभी परमात्मा की सन्तान हैं, सभी उसके पुत्र हैं, अत: उनकी प्रसन्नता के लिये प्राणिमात्र के हित के लिये कार्य करना चाहिये।

(4) जीवन के प्रत्येक क्षण को मनोयोगपूर्वक जीने का प्रयत्न करना चाहिये-जीवन का कौन-सा पल अन्तिम होगा—यह कोई नहीं जानता। जिस व्यक्ति के पल संभल गये, उसके मिनट संभल गये, जिसके मिनट संभल गये, उसके घण्टे संभल गये, जिसके घण्टे संभल गये उसके दिन संभल गये, जिसके दिन संभल गयें उसके महीने संभल गये, जिसके महीने संभल गये, उसके वर्ष संभल गये और जिसके वर्ष संभल गये, उसका जीवन संभल गया। इसलिये आवश्यक है कि जीवन के हर पल को अपना कर्त्तव्य करते हुए ईमानदारी से जिया जाय।

(5) जीवन का उद्देश्य आध्यात्मिक रूप से साहसी बनने में है-शक्ति का स्रोत है 'अभय'। जो प्रभु की राह पर चलने में आने वाली कठिनाइयों तथा बाधाओं से डरता नहीं, वह निर्बल होते हुए भी मजबूत जीवटवाला व्यक्ति होता है, लेकिन आसान बात नहीं है 'अभय' होना। भय तो हर समय हर कहीं है। आज स्वास्थ्य और तनाव की समस्या का एक बड़ा कारण है—भय या डर। भय शरीर को ही नहीं, मनोबल भी कमजोर करता है। अनेक भयंकर बीमारियों का कारण भी यह भय ही है। अपना जीवन परमात्मा के हाथों में सौंपकर ही हम 'अभय' हो सकते हैं, क्योंकि परमात्मा की ही इच्छा और आवश्यकता के कारण ही प्राणी का जीवन धरती पर है।

(6) जीवन में संतुलन बनाये रखें-सफल जीवन भौतिकता, सामाजिकता तथा आध्यात्मिकता के सन्तुलन का नाम है। जीवन की इन तीनों वास्तविकताओं में जो सन्तुलन स्थापित करता है, वही जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होता है।

(7) हर परिस्थितियों में जीवन का सम्मान करना चाहिये-कहते हैं कि सच्चे अर्थों में वही महान् होता है जो अपने दु:खों को भुलाकर परोपकार में जुट जाता है। कई बार ऐसा होता है कि मौत की आहट अनसुनी कर हमें जीना होता है। इस बात को असाध्य रोग से ग्रसित रोगियों को देखकर आसानी से समझा जा सकता है। उन्हें निरन्तर शारीरिक तथा मानसिक पीड़ा महसूस होती है। यहाँ मुख्य बात यह है कि ऐसी हालत में भी आप जीवन के प्रति कैसा रवैया रखते हैं। दु:खों और कष्टों से घबराकर पलायनवादी और आत्मघाती प्रवृत्ति मानना तो मूर्खता ही है, क्योंकि समय और परिस्थितियाँ शाश्वत नहीं, परिवर्तनशील हैं। जीवन में सुख-दु:ख तो आते-जाते ही रहते हैं।

(8) सुख बाहरी वस्तुओं में नहीं वरन् हमारे सोचने के तरीके पर निर्भर करता है-यदि हमें सुखी होने के लिये दूसरे की जरूरत पड़ती है तो यह एक तरह की दूसरे की इच्छा पर निर्भरता हुई और हर तरह की परनिर्भरता दु:ख लाती है। दूसरा व्यक्ति आकर मुझे खुश करे, यह अपेक्षा ही क्यों करनी? और वह दूसरा व्यक्ति भी यही अपेक्षा लिये बैठा है। जब हम संसार में अर्थात् किसी वस्तु में, किसी घटना में, किसी व्यक्ति में सुख खोजते हैं तो अन्तिम परिणाम सिवाय दु:ख के और कुछ नहीं होता। परमात्मा का नाम ही हमारा आरोग्य है तथा परमात्मा का स्मरण ही हमारी औषधि है।

(9) जीवन में आत्मकेन्द्रित होने से बचना चाहिये-केवल अपने हर काम को, विचार को या दृष्टिकोण को ही सबसे महत्त्वपूर्ण नहीं समझना चाहिये, अगर हम इस तरह किसी आदत से परेशान हैं तो उसे दूर करना चाहिये। हम जब अपने हर काम को सबसे महत्त्वपूर्ण समझते हैं तो केवल खुद को ही महत्त्व देते हैं। हम जब आत्मकेन्द्रित हो जाते हैं तो दूसरे के पक्ष तथा दृष्टिकोण का समझने की हमारी क्षमता क्षीण हो जाती है। किसी व्यक्ति में हजार गुण होने के बावजूद यदि उसमें एक स्वार्थ का अवगुण आ जाये तो उसके सारे गुण समाप्त हो जाते हैं।

(10) 'हर समय के लिये अच्छा कार्य और हर अच्छे कार्य के लिये समय' का स्वभाव विकसित करें-कहावत है—"In this short span of life man should do virtuous deed." अर्थात् इस क्षणभंगुर जीवन में मनुष्य को अच्छे कार्य करने चाहियें। अच्छे कार्य से तात्पर्य है, ऐसे कार्य, जिनसे समाज और मानवता का भला हो। प्रत्येक मनुष्य का यह कर्त्तव्य भी है कि वह अच्छे कार्य करे और अपने व्यक्तिगत जीवन से समय निकालकर अच्छे कार्य करे।

(11) सारी वसुधा एक कुटुम्ब के समान है-यह सारी धरती एक देश है तथा हम सभी इसके नागरिक हैं। सारी वसुधा एक कुटुम्ब के समान है, उस परमात्मा के नाते, जिसने इस धरती और उसके प्राणियों को बनाया है, हम सब कुटुम्बी और बन्धु-बान्धव हैं, वह परमात्मा ही हमारा परमपिता है। भारतीय संस्कृति सदा से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उद्घोष करती रही है। प्रत्येक मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि उस परमपिता परमात्मा के नाते सबको अपना बन्धु माने और उसके कल्याण का प्रयास करे।

संपर्क-आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।